कवि विकास 'यशकीर्ति' के काव्य में प्रतीक योजना

DR NARENDER
LECTURER IN HINDI
Govt. Sr. Sec School Kawi Panipat

प्रति +एक का धात्वर्थ है–'प्रति' अपनी ओर,'इक'झुका हुआ अर्थात जब किसी वस्तु या पदार्थ का कोई भाग गोचर होते हुए भी अपने गोचर रुप से इतर वस्तु , पदार्थ या भाव का ज्ञान कराए उसे प्रतीक कहा जाता है। प्रतीक उन अदृश्य अथवा सूक्ष्म मानवीय भावों को रुप अथवा वाणी देने का प्रयास करते हैं जो शब्दों की गहराई में छिपे हुए होते हैं।दूसरी ओर अपने भीतर किसी देश अथवा समाज की व्यापकता को समाहित किए हुए होता है अतः प्रतीक के संदर्भ में कहना गलत ना होगा कि प्रतीकों के माध्यम से हम थोड़े में अधिक कहने की सामर्थ्य रखते हैं ।युवा कवि विकास यशकीर्ति आधुनिक काव्य जगत के एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने काव्य में नए–नए प्रतीकों के प्रयोग के मामले में प्रयोगवादी कवियों को कहीं पीछे छोड़ दिया है ।कवि यशकीर्ति के काव्य में अत्याधुनिक प्रतीकों का प्रयोग अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। जहां प्रयोगवादी कवियों ने नवीन प्रतीकों के प्रयोग के मोह में पड़कर उनकी साम्यता की भी परवाह नहीं की थी, वहीं विकास यशकीर्ति की प्रतीक योजना बेशक अनूठी है मगर बेमेल कतई नहीं है।काव्य में वैविध्यपूर्ण प्रतीकों का प्रयोग करके अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करने में इनको महारत हासिल है।विषय अनुसार नवीन एवं परंपरागत प्रतीकों का प्रयोग इनके काव्य में हुआ है। इनके द्वारा काव्य में प्रमुख रूप से प्रयुक्त किए गए प्रतीक न केवल सूक्ष्म अनुभूतियों के सफल व्यंजक हैं बल्कि उनकी विद्वता के भी परिचायक हैं ।ये काव्य में प्राकृकि,पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक व वैज्ञानिक प्रतीकों के साथ–साथ वर्तमान युग में सरकारों द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं , इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस एवं सोशल साइट्स आदि को भी प्रतीक रूप में व्यक्त करने से नहीं चूके हैं। इनके काव्य में व्यक्त प्रतीक योजना का विवेचन विश्लेषण विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है

मनुष्य और प्रकृति एक दूसरे के अभिन्न अंग हैं और यही कारण है कि आज हम भले ही उन्नति के उच्च शिखर पर हैं मगर आज भी प्रकृति के ही नियंत्रण में हैं। वैदिक युग से लेकर आधुनिक युग तक की साहित्यक यात्रा में कोई भी पड़ाव ऐसा नहीं मिलता जहां साहित्य में प्रकृति का चित्रण न हो। तो भला यशकीर्ति जैसा सहृदय कवि प्राकृतिक प्रतीकों का मोह कैसे छोड़ सकता है। उन्होंने प्रकृति के विभिन्न प्रतीकों का प्रयोग अपने काव्य में करके एक तरफ जहां काव्य को सरसता प्रदान की है वहीं भाषा की शब्द शक्ति का भी परिचय दिया है। यथा–

''साधना साधक की जैसे कोई निष्फल रह गई हो

टूट कर पाती लता से जो हवा में बह गई हो''

गीतों से संवाद,पृष्ठ संख्या–24

तथा

'' मधुर मधुर मधुमास के जैसी शोख अदाएं मस्तानी

मुखमंडल पर दमके आभा प्रीत हुई है दीवानी

सहमी सहमी चाहत लेकर तिरछी नजरें ताक रहीं

तुझको पाना एक बुलावा प्यार मेरा है बेमानी'

गीतों से संवाद,पृष्ठ संख्या–26

यहां पर 'टूट कर पाती लता से' का प्रयोग विरह भावना के सैलाब को व्यक्त करने के रूप में हुआ है तथा 'मधुमास' नायिका के सौंदर्य के प्रतीक के रूप में प्रयोग करके काव्य मेंचमत्कार उत्पन्न किया है

प्रकृति के बाद प्रतीकों का सबसे बड़ा स्रोत मनुष्य के पुराने अनुभव हैं ।काव्य में यही पुराने अनुभव तथ्य से कथ्य का माध्यम बन जाते हैं। इतिहास ने हमें जो व्यंजक दिए हैं वे न केवल ग्रंथों में उपलब्ध हैं बल्कि हमारी स्मृति में भी रचे– बसे हुए हैं और यही स्मृतियां काव्य में जब उभरती हैं तो ऐतिहासिक बोध के साथ–साथ काव्य की रोचकता में भी वृद्धि करती हैं ।कवि यशकीर्ति के काव्य में ऐतिहासिक प्रतीकों का सुंदर चित्रण हुआ है। जैसे–

''देख मेरे महबूब को एक दिन मन ही मन में सोचे ताज

उससे भी जो सुंदर दिखता ,बैठा कौन है सामने आज ''

गीतों से संवाद, पृष्ठ संख्या–61

तथा

'वेद की खिलती ऋचा गीतांजलि टैगोर कि तुम

सूर की भक्ति से पावन अर्चना हो भोर की तुम

रक्त की तरह रगों में बह रही हो तुम निरंतर

आई कैसे इस धरा पर हंसिनी नभछोर की तुम

गीतों से संवाद, पृष्ठ संख्या–78

''

यहां 'ताज' जहां सौंदर्य का प्रतीक है वहीं 'वेद की ऋचा' और 'गीतांजलि टैगोर की' क्रमशः प्रिये की पवित्रता के प्रतीक के रूप में प्रयोग करके काव्य भाषा को मनोरम रुप प्रदान करने के साथ साथ कवि ने पाठकों कौं अनायास ही सूर व टगौर जैसे महान कवियों का भी स्मरण करवा दिया।

इन्होंने अपने काव्य में पौराणिक प्रतीकों का प्रयोग विभिन्न सूक्ष्म भावों को अभिव्यक्त करने के लिए किया है यथा–

''मैं अहिल्या बनकर बैठे ठोकरों की चाह में

राम मेरे तुमने न आए पत्थरों की राह में ''

गीतों से संवाद, पृष्ठ संख्या–34

यहाँ 'अहिल्याा ' पौराणिक पात्र है जिसको कवि ने परित्यक्ता नारी के प्रतीक के रूप में प्रयोग करके काव्य में मार्मिकता का रंग भरा है।

भारतीय सांस्कृतिक मूल्य कवि की रग–रग में बसे हुए हैं। इन्होंने सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग करके जहां भारतीय संस्कृति के प्रति अपनी आस्था का परिचय दिया है वहीं उनके द्वारा प्रयुक्त प्रतीक काव्य में भाव गंभीरता का रंग भरने में भी सफल हुए हैं। सांस्कृतिक प्रतीकों के कुछ उद्धरण यहां द्रष्टव्य हैं –

''छल कपट की गर्द से मैली ये गंगा हो गई

भागता फिरता हूं ऐसे तरह के श्राप से'

गीतों से संवाद, पृष्ठ संख्या–72

'

तथा

''महल, मिनारें, दुर्ग, चौबारे इंसानों की बात है क्या

'शिव शंकर' भी फंसते देखें अब के इन बरसातों में

गीतों से संवाद, पृष्ठ संख्या–78

''

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने गंगा व शिव को क्रमशः पवित्रता एवं त्याग के प्रतीक के रूप में व्यक्त किया है। पौराणिक प्रतीकों के साथ–साथ आध्यात्मिक व धार्मिक प्रतीकों का भी सार्थक प्रयोग उल्लेखनीय है ।यथा–

''एक उजली सी नदी है मन की काशी इन दिनों

बेवजह क्यों बढ़ रही है एक उदासी इन दिनों''

तथा

सात समंदर पार पिया जाने किस देश में रहते हैं

पंछी भी नाकाम रहे हैं संदेशा पहुंचाने में

गीतों से संवाद, पृष्ठ संख्या–65

तथा

''जीवन की चौसर पर हर पासा ही उल्टा पड़ता है

दोस्त पुराने खो बैठा हूँ रिश्ते नए निभाने में''

गीतों से संवाद, पृष्ठ संख्या–64

यहां पर 'सात समंदर' साधक के मार्ग में आने वाली बाधाओं का प्रतीक है तो 'पिया' परमात्मा व चौसर जिंदगी में आने वाले उतार–चढ़ाव का प्रतीक है इन प्रतीकों के अतिरिक्त कवि ने अत्याधुनिक एवं नए–नए प्रतीकों का प्रयोग करके साहित्य जगत में न केवल एक विशिष्ट पहचान बनाई है बल्कि हिन्दी साहित्य को नवीनतम एवं मौलिक प्रतीकों की विपुल सौगात दी है। यथा–

''इंटरनेट कीइस नगरी में उंगली पर संबंध टिके

रद्दी में दीवान पड़ा है, शायर, लेखक, छंद बिके''

गीतों से संवाद, पृष्ठ संख्या–52

यहां संबंधों में आई स्थिलता कोव्यक्त करने के लिए इससे अच्छा प्रतीक मिलना नामुमकिन है।जीवन में निराशा एवं अवसाद को बड़े नए अंदाज में व्यक्त करते हुए कवि कहते हैं –

दे रही है क्या सुकूं यह ऑफलाइन जिंदगी

शाम की ठंडी हवा और रेड वाइन जिंदगी

हर समय की बेकली बेचौनियां बेताबियां

रात रात भर जगकर कटी ऑनलाइन जिंदगी

दर्द का दावानल पृष्ठ संख्या–89

तथा

नयन गीले होंठ सूखे मैं कुछ टूटी हुई सी हूं

मेरा अस्तित्व दिल्ली सा है बहुत लूटी हुईसीहूं

दर्द का दावानल पृष्ठ संख्या–101

विषम परिस्थितियों के कारण दो प्रेमी हृदयों के न मिल पाने की बेबसी को कवि ने दिल्ली सरकार द्वारा लागू की गई परिवहन पॉलिसी ऑड–ईवन का प्रतीक ग्रहण करके जो मार्मिकता प्रदान की है वह वास्तव में ही काबिल–ए–तारीफ है। यथा–

यह उछलती जिंदगी भी शांत जीवन हो गया

क्या पता क्या आरजू से टेक गीवन हो गया

वह तो सम के ताल पर थी मैं विषम की ठोकरों पर

अब मोहब्बत का यह दुश्मन ओड ईवन हो गया

दर्द का दावानल पृष्ठ संख्या 111

कवि ने जिंदगी में सफलता की ऊंचाइयों को छू लेने के बावजूद भी अपने प्रिय से बिछुड़ने की टीस को जिन प्रतीकों की माला में पिरो कर पाठकों व श्रोताओं के समक्ष रखा

है वह वास्तव में ही सराहनीय है। यथा–

बड़ी वीरान खामोशी और यह तनहाई का आलम

ऊंची सीउड़ानों में बहुत चुपचाप सा पालम

तुम्हारा जिक्र ब्रेकिंग न्यूज की सुर्खियां जैसे

मैंसहमारहाजैसेकोईअखबारका कालम

दर्द का दावानल पृष्ठ संख्या–90

इस प्रकार कवि विकास यशकीर्ति के काव्य में प्रतीक योजना का गहनता से अध्ययन एवं विवेचन–विश्लेषण करने के बाद कहा जा सकता है कि यद्यपि कवि प्राकृतिक, पौराणिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक प्रतीकों के प्रति अपना मोह को नहीं छोड़ पाया है मगर उनके द्वारा अत्याधुनिक एवं नवीन प्रतीकों का प्रयोग वास्तव में ही साहित्य जगत में एक मील का पत्थर साबित हुआ है। उनके काव्य में 'ऑड–ईवन,' ' ब्रेकिंग न्यूज' ' रेड वाइन''ट्रेडमिल (कठोर मेहनत करने के बाद भी वैसे ही स्थिति रहना)'ऑनलाइन– ऑफलाइन''बालों का

जूड़ा' 'पालम हवाई अड्डा' 'सोनिया–मोदी' आदि अनेक प्रतीक न केवल काव्य में उनके द्वारा किए गए नए प्रयोगों का परिचायक है बल्कि काव्य में नवीन प्रयोगों को पढ कर या सुनकर हर एक व्यक्ति के मुख से वाह– वाह ही निकलता है।

उपजीव्य ग्रंथ–

1 गीतों से संवाद

2 दर्द का दावानल